अंक : 20

जुलाई-2024

सरयू दर्पण

नराकास, अयोध्या का मासिक न्यूज-बुलेटिन

गुप्तार घाट, अयोध्या

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अयोध्या
Town Official Language Implementation Committee, Ayodhya
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार
Department of Official Language, Ministry of Home Affairs, Govt. of India

संयोजक /Convener

बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda
क्षेत्रीय कार्यालय ,अयोध्या
Regional Office, Ayodhya

सत्यमेव जयते

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति अयोध्या

जुलाई माह 2024 के दौरान नराकास, अयोध्या की राजभाषा गतिविधियाँ

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अयोध्या के तत्वावधान में दिनांक 03.07.2024 को बैंक ऑफ बड़ौदा द्वारा सदस्य कार्यालयों के लिए **"राजभाषा अभिप्रेरणा कार्यक्रम सह कार्यशाला"** का आयोजन किया गया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अयोध्या के तत्वावधान में दिनांक 26.07.2024 को पंजाब नेशनल बैंक द्वारा सदस्य कार्यालयों के लिए **"राजभाषा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता"** का आयोजन किया गया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अयोध्या के तत्वावधान में भारत संचार निगम लिमिटेड, कार्यालय महाप्रबंधक, अयोध्या द्वारा सदस्य कार्यालयों के लिए **"चित्र देखो कहानी लिखो प्रतियोगिता"** का आयोजन किया गया।

हिंदी साहित्य के पुरोधा-2

"मुंशी प्रेमचंद"

मूल नाम : धनपत राय श्रीवास्तव

जन्म : 31 जुलाई 1880 (वाराणसी, उ.प्र.)

निधन : 08 अक्टूबर 1936 (वाराणसी, उ.प्र.)

मुंशी प्रेमचंदजी का जन्म 1880 में वाराणसी से लगभग चार मील दूर लमही गाँव में एक गरीब परिवार में हुआ था। उनके पिता अजायब राय एक डाकिया के रूप में काम करते थे, जब प्रेमचंद जी केवल सात वर्ष के थे, तब उनकी माता की मृत्यु हो गई और चौदह वर्ष की उम्र में उनके पिता की भी मृत्यु हो गई। इसके बाद उनके परिवार की आर्थिक स्थिति और भी ख़राब हो गई।

मुंशी प्रेमचंदजी ने अपने जीवन की शुरुआती दिनों में घर की जिम्मेदारी संभालनी शुरू कर दी और रोटी कमाने के लिए ट्यूशन का सहारा लिया, कठिन परिस्थितियों के बावजूद भी प्रेमचंदजी ने मैट्रिक की परीक्षा पास की और अपनी शैक्षिक यात्रा जारी रखी। उनके संघर्षपूर्ण जीवन ने उन्हें समाज की वास्तविकताओं को समझने और उन्हें अपने साहित्य में व्यक्त करने के लिए प्रेरित किया।

एक स्कूल मास्टर के रूप में काम करते हुए, उन्होंने अपनी शिक्षा जारी रखी और एम.ए. और बी.ए. की डिग्री अर्जित की। अपनी कड़ी मेहनत और लगन के बल पर, उन्हें 1921 में गोरखपुर में स्कूल के उप निरीक्षक के पद पर नियुक्त किया गया। उनकी इस उपलब्धि से उनके जीवन में स्थिरता और संतुष्टि आई और साहित्यिक गतिविधियों के लिए समय और संसाधन भी मिले।

सरकारी नौकरी छोड़ने के महात्मा गांधी के आह्वान पर प्रेमचंद जी ने भी अपनी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। इसके बाद उन्होंने कुछ समय तक कानपुर के मारवाड़ी स्कूल में पढ़ाया और फिर काशी विद्यापीठ में प्रधान अध्यापक के रूप में काम किया। इसके बाद उन्होंने विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं का संपादन किया और काशी में एक प्रेस की स्थापना की, जिससे साहित्यिक गतिविधियों को नया आयाम मिला।

मुंशी प्रेमचंद ने अपने साहित्यिक जीवन में लगभग एक दर्जन उपन्यासों और 300 कहानियों की रचना की। उन्होंने 'माधुरी' और 'मर्यादा' जैसी पत्रिकाओं का संपादन किया तथा 'हंस' और 'जागरण' समाचार पत्र भी प्रकाशित किये। वे उर्दू रचनाओं में 'नवाब राय' नाम से लिखते थे। उनकी रचनाएँ यथार्थवाद का उदाहरण हैं, जिनमें जीवन की वास्तविकताओं का सजीव चित्रण किया गया है। सामाजिक सुधार और राष्ट्रवाद उनके लेखन के प्रमुख विषय रहे हैं, जो उनके कार्यों को एक गहरा सामाजिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य प्रदान करते हैं।

प्रेमचंद जी ने हिंदी कथा साहित्य को एक नई दिशा देने का क्रांतिकारी कार्य किया। उनकी रचनाओं में सामाजिक सुधार के प्रति भावनात्मक प्रेम और राष्ट्रीय भावनाओं की गहराई उभरती है। उनकी कहानी 'माँ' अपने समय की सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों का संपूर्ण चित्रण है। उन्होंने किसानों की दुर्दशा, सामाजिक बंधनों में उलझी महिलाओं की पीड़ा और जाति कठोरता के बीच संन्यासी परिवार की पीड़ा का गहन चित्रण किया है।

प्रेमचंद ने अपनी किताबों में यह भी लिखा है कि वे भारत के दलित लोगों, शोषित किसानों, मजदूरों और उपेक्षित महिलाओं के प्रति सहानुभूति रखते थे। उनकी रचनाएँ सामयिकता के साथ-साथ उन तत्वों से भरपूर हैं जो उन्हें शाश्वत एवं स्थायी बनाते हैं। मुंशी प्रेमचंद अपने समय के उत्कृष्ट कलाकारों में से एक थे, जिन्होंने हिंदी साहित्य को नए युग की आशाओं और आकांक्षाओं की जीवंत अभिव्यक्ति का सफल माध्यम बनाया।

मुंशी प्रेमचंद जी की कहानी सूची के रूप में पूरा एक सरोवर विद्यमान है, जिसमें 300 से अधिक कहानियाँ हैं और इनमें से 188 कहानियाँ विशेष हैं। उनकी रचनाएं समाज, राजनीति और मानवीय रिश्तों की गहराई से जुड़ी हुई हैं । प्रेमचंद जी ने अपनी कहानियों में विभिन्न सामाजिक मुद्दों और मानवीय दुःखों का सामाजिक संकेत दिया, जिसके कारण उनकी रचनाएँ आज भी प्रासंगिक और महत्वपूर्ण हैं।

प्रेमचंद ने हिंदी साहित्य को अमूल्य विरासत देते हुए अपनी रचनात्मकता और साहित्यिक रचनाएँ जारी रखीं। उनका जीवन संघर्ष और उपलब्धियों से भरा रहा, जो आज भी साहित्य प्रेमियों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत है।

कवियों और शायरों की नजर में 'प्रेमचंद'

बनके टूटे दिलों की सदा प्रेमचंद,
देश से कर गये है वफा प्रेमचंद।
जब कि पूरी जवानी पर था साम्राज्य
उस ज़माने के हैं रहनुमा प्रेमचंद।

देखने में शिकस्ता-सा एक साज़ है
साथ लाखों दुखे दिल की आवाज़ है।
इनके अधरो पर मुस्कान चितवन पर बल,
इनके शब्दों में जान, इनकी भाषा सरल।

इनकी तहरीर गंगा की मौजे-रवाँ
इनका हर लफ्ज कागज पर जैसे कमल।
इनको महबूब हिन्दी भी, उर्दू भी थी।
इनके हर फूल के साथ खुशबू भी थी।

"नजीर बनारसी"

हिंदी-उर्दू बहन-बहन को गले मिलाया।
आपस के चिर बैर भाव को मार भगाया।
रोती हिंदी इधर उधर उर्दू बिलखाती
भला आज क्यों तुम्हें नहीं करुणा कुछ आती?"

जगन्नाथ आज़ाद आह!
मुंशी प्रेमचंद नज़्म में कहते हैं-
ज़ीनते-बज़्मे-अदब है तेरा साग़र प्रेमचंद!
जब तलक ये गर्दिशे-दौरे-जहाँ मौजूद है॥

नाम तेरा मिट नहीं सकता जहाँ से जब तलक।
ये ज़मीं मौजूद है, ये आस्माँ मौजूद है॥
तेरे अफ़सानों में रूहे-पाक तेरी ज़िन्दा है।
तेरे हर इक लफ़्ज़ में तनवीरे-जाँ मौजूद है

"गौरी शंकर मिश्र द्विजेंद्र"

आ जुटे अचानक गुपचुप ही
कुछ नाम-उछालू गर्जमंद
दौड़े शब्दों के सौदागर
दौड़े शिल्पों के नटनागर
पंडों ने घेर लिया घर को
लमही से भागे प्रेमचंद...
जिनको अंदर से नफ़रत थी
लाइन में वे भी खड़े दिखे
आहत दलितों के शोणित से
ध्वज-पट पर निज-निज नाम लिखे
चंदाखोरी में महा-मस्त
भागे आए फिरकापरस्त
जिनके दादा ने नाना ने
उस कथाकार को पीटा था
जिन दुष्टों ने बदनामी की
कीचड़ में उसे घसीटा था
वे सबके सब भागे आए
कुछ मतलब था आगे आए
यजमान ट्रकों में ले पहुँचे
क्विंटल के क्विंटल कलाकंद
पंडों ने घेर लिया घर को
लमही से भागे प्रेमचंद !

"नागार्जुन"

गोबर, घीसू, माधव, हामिद, होरी एवं धनिया।
प्रेमचंद के जरिए इनसे मिल पाई है दुनिया।

प्रेमचंद ने कथाजगत को वह तबका दिखलाया
जिसका शोषण करते आए
सदियों ठाकुर, बनिया।

रात पूस की ठंडी हो कर कैसे जलती आई
कैसे बिना दवा दम तोड़े
इक गरीब की मुनिया।

प्रेमचंद ने 'कफ़न' कहानी में यथार्थ लिख डाला
दारूखोरों के घर तड़पे
एक अभागी तिरिया।

इक मशाल था जिसका लेखन
उसको 'शरद' नमन है
प्रेमचंद थे भावनाओं के इक सच्चे कांवरिया।

"शरद सिंह"

कवियों और शायरों की नजर में 'प्रेमचंद'

ईदगाह सी लिखी कहानी और गबन गोदान,
दर्द लिखा है निर्धन जन का लेखक हुए महान।

प्रेमचंद की सभी कथाएं सुनी पढ़ी जाती हैं,
बूढ़ी काकी कफ़न कामना सबको ही भाती हैं।

नशा स्वामिनी इस्तीफा भी हैं पुस्तक की शान,
दर्द लिखा है निर्धन जन का लेखक हुए महान।

मंदिर मस्जिद मंत्र आभूषण लिखा ईश्वरीय न्याय,
अलगोझा ज्योति लिखी और गरीब की हाय।

हाय निर्मला की संकट में फंसी रही है जान,
दर्द लिखा है निर्धन जन का लेखक हुए महान।

हलकू होरी धनिया जबरा और आत्माराम,
हामिद और अमीना सब ही करें प्रेम से काम।

बड़े भाई साहब तो देखो हैं भाई के प्राण,
दर्द लिखा है निर्धन जन का लेखक हुए महान।

मुंशी प्रेमचंद का सचमुच वृहद कथा संसार,
जन मानस के पटल पर गूँज रहा विचार।

होरी की सारी फ़सल, चढ़ी ब्याज की भेंट,
भूख प्यास का मूलधन, धनिया रही समेट।

सिंहासन पर जो चढ़े, जनता की जय बोल,।
जनता उनकी कार का, अब केवल पेट्रोल।

रख किसान की मौत पर, कुछ अभिशप्त सवाल,
आँसू-आँसू खेलते , संसद में घड़ियाल।

"सतीश श्रीवास्तव"

प्रेमचंद की सोहबत तो अच्छी लगती है
लेकिन उनकी सोहबत में तकलीफ बहुत है...

"गुलजार"

धनपत मुंशी प्रेम थे, सब उनके ही नाम।
सूर्य सत्य साहित्य के, लमही उनका धाम।

ईदगाह का बाल मन, होरी का संसार।
गबन कफ़न सोजे वतन, हैं समाज आधार।

पंच सदा निष्पक्ष हो, परमेश्वर के रूप।
बूढ़ी काकी में लिखा, सामाजिक विद्रूप।

प्रेमचंद की लेखनी, दर्पण सत्य समाज।
प्रासंगिक थी उस समय, प्रासंगिक है आज।

कालजयी लिखते कथा, उपन्यास सम्राट।
प्रेमचंद साहित्य के, बरगद विशद विराट।

देशप्रेम जनहित सरल, शाश्वत सत्य सुरेख।
आम आदमी से जुड़े, उनके सारे लेख।

समय सारथी सत्य के, प्रेमचंद सदज्ञान।
कालजयी थी लेखनी, सरस्वती अवदान।

"डॉ. सुशील कुमार शर्मा"

सन् अट्ठारह सौ अस्सी, लमही सुंदर ग्राम।
प्रेमचंद को जनम भयो, हिन्दी साहित काम।।

परमेश्वर पंचन बसें, प्रेमचंद कहि बात।
हल्कू कम्बल बिन मरे, वही पूस की रात।।

सिलिया को भरमाय के, पंडित करता पाप।
धरम ज्ञान की आड़ में, मनमानी चुपचाप।।

बेटी बुधिया मर गई, कफन न पायो अंग।
घीसू माधू झूमते, मधुशाला के संग।।

होरी धनिया मर गए, कर न सके गोदान।
जीवनभर मेहनत करी, प्रेमचंद वरदान।।

मुन्नी तो तरसत रही, आभूषण नहि पाई।
झुनिया गोबर घूमते, बिन शिक्षा के माहि।।

बेटी निर्मला कह रही, कन्या दीजे मेल।
जीवनभर को मरण है, ब्याह होय बेमेल।।

पंच बसे परमात्मा, खाला लिए बुलाय।
शेखा जुम्मन देखते, अलगू करते न्याय।।

"दशरथ मसानिया"

हिंदी के प्रयोग के लिए भारत सरकार द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम 2024-25

क्र.सं.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को **100%** 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को **100%** 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को **65%** 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र **100%** के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/ व्यक्ति	1 ख क्षेत्र से क क्षेत्र को **90%** 2 ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को **90%** 3 ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को **55%** 4.ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र **90%** के राज्य/संघ राज्यक्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	1 ग क्षेत्र से क क्षेत्र को **55%** 2 ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को **55%** 3 ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को **55%** 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र **55%** के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुलअनुदान में से डिजिटल सामग्री अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
10.	हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में काम करने की सुविधायुक्त इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों जिनमें कंप्यूटर भी शामिल है, की खरीद	100%	100%	100%

हिंदी के प्रयोग के लिए भारत सरकार द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम 2024-25

11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्ड आदि द्विभाषी रूप में प्रदर्शित किए जाएं।	100%	100%	100%
13.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण		
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें			
	(क) हिंदी सलाहकार समिति	वर्ष में 2 बैठकें		
	(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 2बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक)		
	(ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)		
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/ उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हों।	40%	30%	20%
		(न्यूनतम अनुभाग)		
		सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, "क" क्षेत्र में कुल कार्य का 40%, "ख" क्षेत्र में 25% और "ग" क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए।		

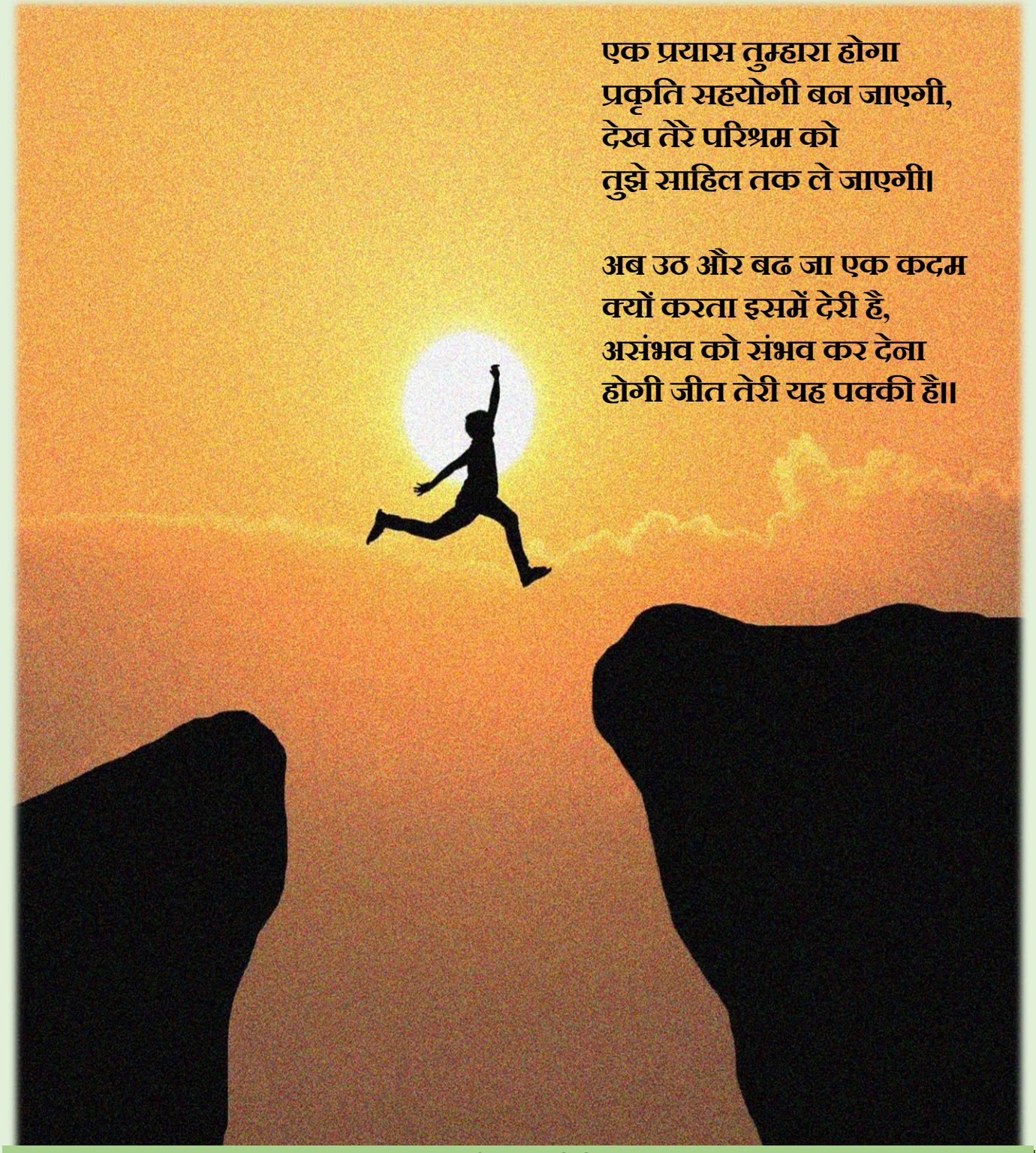

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अयोध्या
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार

संयोजक

बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda
क्षेत्रीय कार्यालय ,अयोध्या

समिति अध्यक्ष : श्री अमित बैनर्जी
समिति उपाध्यक्ष : श्री दिलीप चंद्र वर्मा
सदस्य सचिव : श्री अम्बरीश वर्मा
ई-मेल : narakasayodhya@gmail.com
वेबसाइट : www.narakasayodhya.com